Std. VIII - Hindi

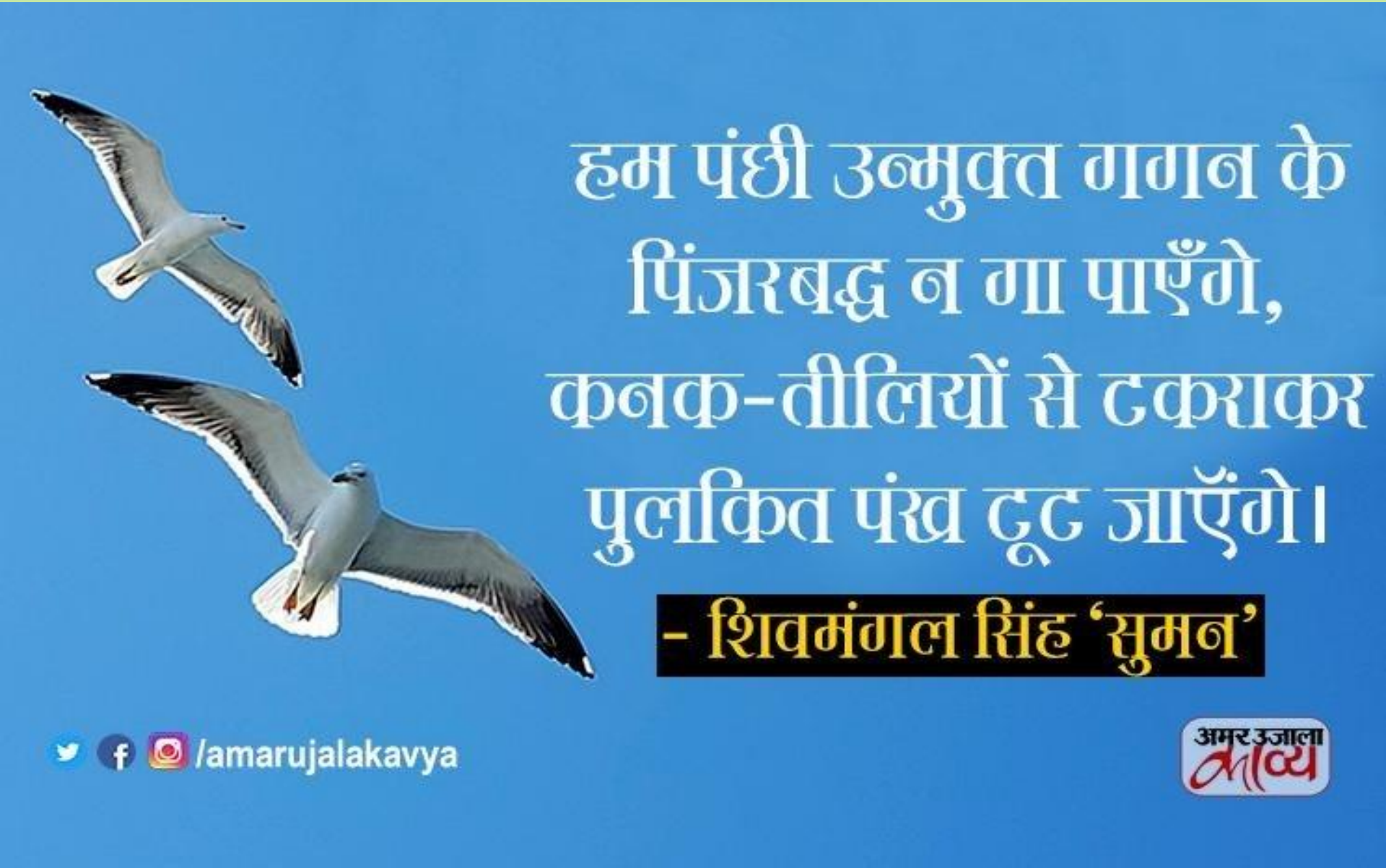

शिवमंगल सिंह 'सुमन' की मशहूर रचना:

हम पंछी उन्मुक्त गगन के

हम पंछी उन्मुक्त गगन के
पिंजरबद्ध न गा पाएँगे,
कनक-तीलियों से टकराकर
पुलकित पंख टूट जाएंगे।

भावार्थ- **जो पंछियाँ खुले आकाश में उड़कर जीवन बिताने वाले हैं वे पिंजरे में बंद हैं. ऐसी स्थिति में वे अपना स्वाभाविक राग से गान नहीं कर सकते.दूसरी तरफ उनके कोमल व पुलकित पंख सोने की तिलियों से बार-बार टकरा कर नष्ट हो जायेंगे.फिर तो वे कभी उड़ ही नहीं पायेंगे.ये पंछियाँ आजाद होकर जीना चाहते हैं.**

हम बहता जल पीनेवाले
मर जाएंगे भूखे-प्यासे,
कहीं भली है कटुक निबोरी
कनक-कटोरी की मैदा से .

भावार्थ - पंछियों का कहना है कि वे बहता जल यानी नदी और नालों के जल पीकर जीवन जीते हैं.वे भूखे प्यासे मरने के लिए तैयार हैं लेकिन बंदी बनकर रहना उन्हें पसंद नहीं.उन्हें तो सोने के पात्र में दिए गए मैदा से काफी आनंद नीम के कड़वे फल खाने में मिलेगा.अर्थात् बंदी बनकर स्वादिष्ट व्यंजन की अपेक्षा आजाद होकर नीम का फल खाना ज्यादा अच्छा लगेगा

ऐसे थे अरमान कि उड़ते
नील गगन की सीमा पाने,
लाल किरण-सी चोंच खोल
चुगते तारक-अनार के दाने।

भावार्थ-

हमारी अरमान नीलाकाश में उड़कर अपनी लाल चोंच से गगन में बिखरे हुए तारक रूपी अनारों को चुगने की है.

होती सीमाहीन क्षितिज से
इन पंखों की होड़ा-होड़ी,
या तो क्षितिज मिलन बन जाता
या तनती साँसों की डोरी।

भावार्थ –

इस सीमा हीन आकाश में हमारे बीच एक-दूसरे से आगे बढ़ जाने की प्रतियोगिता शुरु हो जाती .तब सीमाहीन क्षितिज तक पहुँच पाते या हमारी साँसे फूल जातीं .

नीड़ न दो, चाहे टहनी का
आश्रय छिन्न-भिन्न कर डालो,
लेकिन पंख दिए हैं, तो
आकुल उड़ान में विघ्न न डालो।

भावार्थ-

पंछियों का कहना है कि हमें अगर उड़ने के लिए पंख मिले हैं तो हमको बंदी बनाकर क्यों रखा गया है . अरे तुम हमारे नीड़ों को नष्ट कर दो या पेड़ों की टहनियों को ,जहाँ हम बैठते ,उन्हें भी काट डालो लेकिन हमें पंख दिए गए हैं तो उड़ने की भी आजादी दो .

धन्यवाद